छात्र असंतोष – एक सिंहावलोकन

डॉ0 संजय सिंह*
डॉ0 अनीता सिंह**

छात्र–असंतोष आज के शैक्षिक जगत के लिए एक महत्वपूर्ण तथा विचारणीय तथ्य हो गया है। आज यह एक आम धारणा बन गयी है कि आज के छात्र अधिक अनुशासनहीन, उदण्ड एवं अशिष्ट होते जा रहे हैं। यहाँ तक कि वे हिंसक गतिविधियों में भी लीन होते जा रहे हैं। आज छात्र–असंतोष की समस्या न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन चुकी है। जापान, वियतनाम, भारत, पाकिस्तान, नेपाल, चीन तथा इंडोनेशिया की शैक्षिक संस्थाओं में दिन प्रतिदिन के घटनाक्रम में छात्र–असंतोष को देखा जा सकता है।

संस्थाओं में छात्र–असंतोष केवल शैक्षिक सुधार हेतु ही नहीं है अपितु छात्र–असंतोष राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन या सुधार के लिए भी है। छात्र–असंतोष प्रायः पुरानी पीढ़ी जो सत्ता सम्पन्न होती है तथा उदीयमान नवयुवक जो सत्ता का आकांक्षी होता है के मध्य होता है। अतीत में अनेक बार छात्र विद्रोह के कारण सरकारें गिरी हैं। छात्र विद्रोह ने ही 1960 में दक्षिण कोरिया की एकतन्त्रीय सरकार को 1967 में जापान में नोवोत्सुकी तथा इण्डोनेशिया में सुवरनों की सरकार को प्रभावित किया। 1967 में जर्मनी एवं 1968 में पाकिस्तान की सरकार छात्र आंदोलन में ही गिरीं। भारत में छात्र–असंतोष युवकों में व्याप्त निराशा, तनाव, शिक्षण–संस्थाओं में पायी जाने वाली कमियों, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक दलों तथा उनके नेताओं के स्वार्थ का परिणाम है। आज युवकों में निराशा, असंतोष एवं तनाव का मुख्य कारण उनके जीवन में व्याप्त आर्थिक असुरक्षा है। वर्तमान शिक्षा युवकों को रोजगार की गारंटी नहीं दे पा रही है। फलतः असंतोष पनप रहा है।

वर्तमान समय में समानता, न्याय की कार्यक्षमता, अच्छी आर्थिक स्थिति आदर्श समाज के मूल्य के रूप में प्रस्तुत की जाती है। जब भी मूल्यों का क्षरण या खण्डन होता है, युवा वर्ग विद्रोही हो जाता है। सार्वजनिक रूप से अपने असंतोष को व्यक्त करना इसकी परिधि में आता है। इस दृष्टि से युवा वर्ग द्वारा किये जाने वाले प्रदर्शन, घेराव, हड़तालें, हिंसात्मक कार्य तथा उपद्रव आदि छात्र असंतोष की अभिव्यक्तियाँ हैं।

छात्र–असंतोष कारण है, आन्दोलन असंतोष का परिणाम है। सामान्यतया इन्हें चार प्रमुख क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है– शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक।

छात्र असंतोष–ऐतिहासिकता

अतीत से ही छात्र–असंतोष सम्पूर्ण विश्व हेतु एक गंभीर समस्या है। विकसित एवं विकासशील देशों का छात्र समुदाय तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन के लिए बेताब था। पूर्व में विभिन्न देशों के अपने विभिन्न इतिहास थे। युवा वर्ग तत्कालीन परम्पराओं, धर्म–शिक्षा के पुराने ताने बाने से अलग अपनी पहचान चाहते थे तथा वे अपने देश की सरकार के राजनैतिक नीति के विरोधी थे। छात्र सक्रियता 1960 के दशक की देन मानी जा सकती है। कुछ देशों में छात्र सक्रियता की एक लम्बी ऐतिहासिक परम्परा रही है।

'विदेशों में छात्र–असंतोष'

लगभग 1964 ई0 के आस–पास अमेरिका में छात्रों ने वियतनाम के विरूद्ध अमेरिकी नीति के विरोघ में आंदोलन किया। संयुक्त राज्य अमेरिका की ही भांति जर्मनी, जापान तथा तुर्की आदि देशों में भी छात्र–हड़ताल ने हिंसात्मक रूप लिया था। संयुक्त राज्य अमेरिका में श्वेत छात्रों का नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन में हिस्सा लेना धीरे–धीरे बढ़ा परन्तु 1954 ई0 में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के पश्चात् इसमें स्थिरता आयी। यूरोप के जर्मनी, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भी 1948 की क्रांति के पूर्व विद्यार्थियों में राजनैतिक चेतना थी।

अधिसंख्य देशों में शैक्षिक तथा राजनैतिक कारणों ने छात्र–असंतोष में वृद्धि को बढ़ावा दिया। जर्मनी में उच्च शिक्षा की मांग को लेकर, फ्रांस में सामाजिक विषयों के स्नातक छात्रों की बेरोजगारी को लेकर, ब्रिटेन में राजनैतिक मामलों को लेकर, इटली के विश्वविद्यालयों में और अधिक छात्रवृत्ति तथा सुविधा–विस्तार आदि छात्र–असंतोष के प्रमुख कारण बने।

* प्राचार्य, एम0सी0सक्सेना कालेज ऑफ एजूकेशन, आई0 आई0 एम0, दुबग्गा बाई पास, लखनऊ
** सहायक अध्यापक, बेसिक शिक्षा विभाग, जनपद– प्रतापगढ़।

विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में छात्र असंतोष की स्थिति भिन्न है। एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका में नवयुवकों की लोक कार्यों की सहभागिता के अन्य ऐतिहासिक कारण हैं। इन देशो में विद्यालयों को सामाजिक परिवर्तन के लिए उपयोग किया गया।

लैटिन अमरीका में छात्रो ने शिक्षा के निम्न स्तर के विरोध में आंदोलन किया। इण्डोनेशिया में छात्रों ने साम्यवादियों के विरोध में आन्दोलन किया। जापान में परमाणु–विस्फोट के विरोध में छात्रो ने आंदोलन किया। आज भी युवकों के विद्रोह संसार के सभी देशों में दिखायी देते हैं।

भारत में छात्र–असंतोष

भारतवर्ष में 1880 ई0 में सिविल सेवा परीक्षा में भारतीय छात्रों के साथ न्याय प्राप्त करने हेतु आंदोलन हुआ। 1900 ई0 से छात्र–असंतोष राजनीतिक प्रकरणों की तुलना में सामाजिक तथा शैक्षिक प्रकरणों पर अधिक पाया गया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी छात्र–असंतोष का अपना एक अलग स्थान है। एक सरकारी प्रतिवेदन के अनुसार 1907 से 1917 ई0 के मध्य बंगाल में क्रांतिकारी अपराधों के लिए गिरफ्तार लोगों में से 68 स्कूली छात्र थे।

गांधी जी का 1920 ई0 का असहयोग आंदोलन कांग्रेस द्वारा कराया गया प्रथम बड़ा सामूहिक आक्रोश था। सितम्बर 1920 ई0 में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें विद्यालयों व कालेजों से छात्र व छात्राओं को विद्रोह के लिए बुलाना था। 1938 में भारतीय कालेजों में पूरी तरह से राजनीति आ गयी। अब छात्र भी विद्रोहात्मक क्रियाओं में संलग्न होने लगे। 1942 का संघर्ष भारत का सबसे बड़ा छात्र आंदोलन था। इसमें बहुत से छात्र जेल गये तथा अनेक छात्रों को कालेज से निष्कासित किया गया, किन्तु इस समय तक छात्र आंदोलन का नेतृत्व शैक्षिक रूप से योग्य छात्रों के हाथ में था। चीन से 1962 के युद्ध में भी छात्र–संगठनों ने सक्रियता दिखायी।

उड़ीसा सरकार का संकट (1964), मद्रास में हिन्दी विरोधी असंतोष (1965), वाराणसी में अंग्रेजी विरोधी असंतोष (1966), उत्तर प्रदेश में आरक्षण विरोधी आंदोलन (1989, 2005, 2013) असम–बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश में सरकार का पतन और अलीगढ़, मुस्लिम विश्वविद्यालय का सुधार एक्ट (1972) यह प्रदर्शित करता है कि भारत में छात्र असंतोष की समस्या पूर्णरूप से शैक्षिक समस्या नहीं है वरन् समाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक आदि अन्य कई कारण हैं जो इस देश में हैं। अभी हाल ही में मणिपुर में नागा विरोधी संघर्ष विराम को देश के उत्तर पूर्वी राज्यों तक फैलाने के विरोध स्वरूप हुआ आंदोलन छात्रों के कारण ही इस स्तर तक फैला कि अन्ततः सरकार को अपना फैसला वापस लेना पड़ा।

छात्र–असंतोष पर हुए अध्ययन

छात्र–असंतोष ने संपूर्ण विश्व में इतनी उथल पुथल मचा दी है कि कोई भी मनुष्य जो मानव कल्याण में संलग्न हैं, वे इस ज्वलंत समस्या के समाधान का हल खोजने के लिए सोचने को मजबूर है। कई विचारक, शिक्षाविद् समाज सुधारक और राजनीतिक नेताओं ने अपने अनुभवों और परीक्षणों के आधार पर छात्र–असंतोष के कारणों और सुधारों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि शिक्षक और छात्र के बीच मधुर संबंध जो कि पहले उच्च स्तर की शिक्षा में था, अब कम होता जा रहा है। छात्र–असंतोष समाज के मूलभूत द्वन्दों से सीधे संबंधित नहीं हो सकते हैं। वस्तुतः यह उनके बीच से उठती हुई निराशा की प्रतिच्छाया है। जब छात्रों की शांति राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुप्रयोग के कारण भंग होती है तो उसकी निराशा समाज से विद्रोह या किसी प्रतिष्ठान के प्रतीक गिरजाघर, परिवार और उच्च शिक्षा की संस्थाओं पर आक्रमण के रूप में प्रकट होती है।

न्यूयार्क टाइम्स (29.10.1974 पृष्ठ–37) में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के 23 कालेजों में 13000 नये लोगों के प्रवेश का सर्वेक्षण प्रकाशित हुआ जिसकी रिपोर्ट थी कि उत्तरदाताओं के 50.8% ने यह इंगित किया कि उनके कालेज और सामाजिक जीवन की मुख्य रूचियां पाठ्य सहगामी क्रियाएँ और नयी मित्रता स्थापित करना है। 26.5% द्वारा व्यावसायिक उद्देश्यों को प्रधानता दी गयी, जबकि आदर्शवादिता और बुद्धिपरक विचार मात्र 18.5% लोगों द्वारा महत्वपूर्ण अंकित किये गये। कार्ल डेविडसन पाते हैं कि छात्रों के गहरे विराग स्वयं शैक्षिक प्रक्रिया से होते हैं। इनके अनुसार खराब शिक्षा एवं शिक्षकों का निम्न स्तर तथा समाज में उनका धीरे–धीरे पतन छात्रों की समस्याओं के दो प्रमुख कारण हैं।

प्रख्यात शिक्षाविद् हुमायूँ कबीर ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में छात्र–असंतोष का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि– आकांक्षाओं एवं प्राप्तियों के बीच अन्तराल धीरे–धीरे बढ़ रहा है और यही नवयुवकों के बीच असंतोष का कारण बन रहा है।

1978–79 ई0 में वी0वी0 शाह ने गुजरात के स्कूली छात्रों पर एक अध्ययन किया एवं निष्कर्ष निकाला कि स्कूली छात्रों के अंदर वर्तमान सामाजिक विचारों के लिए आक्रोश है। वे सेक्स सम्बन्धों में स्वतंत्रता चाहते हैं। धर्म की अवहेलना करते है। और उन्होंने अपने से बड़ों में विश्वास खो दिया है।

प्रख्यात शिक्षाविद् एस0 एन0 सरकार ने बिहार के छात्रों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि स्कूलों में दूषित शैक्षिक वातावरण, प्रशासनिक अक्षमता, खराब आर्थिक दशा और राजनीतिक पार्टियों का संघ के चुनाव के समय हस्तक्षेप मुख्य कारण हैं जिनसे छात्र–असंतोष पनपता है।

छात्र–असंतोष के महत्वपूर्ण कारण

''डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद के महाविद्यालयों के छात्रों में छात्र–असंतोष का एक अध्ययन''नामक शीर्षक से लगभग दो दशक पूर्व हुए शोध में इसका निम्न कारण पाया गया–

शैक्षिक क्षेत्र का कारण– इसके अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्र अनुपात में असन्तुलन, दोष पूर्ण अध्यापन प्रणाली तथा शिक्षा प्रणाली का अपने देश की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियो के अनुरूप न होना बताया गया।

प्रशासनिक क्षेत्र का कारण– इसके अन्तर्गत महाविद्यालय प्रशासन द्वारा छात्रों की वास्तविक समस्याओं को समझने में असमर्थता, महाविद्यालय का अनियमित शिक्षण सत्र, महाविद्यालय प्रशासन द्वारा अच्छे छात्रों की अपेक्षा उद्दण्ड छात्रों को महत्व देना, कक्षा आकार बड़ा होने से अध्यापक–छात्र संपर्क का अभाव, अराजक तत्वों का छात्र के रूप में महाविद्यालय में प्रवेश तथा महाविद्यालय में अच्छे छात्रों को महत्व न मिलने को प्रमुख कारण बताया गया है।

राजनीतिक क्षेत्र का कारण– इसके अन्तर्गत छात्र संघों का छात्रों द्वारा दुरूपयोग, वर्तमान आरक्षण नीति से छात्रों में असंतोष, छात्र संघों के चुनाव में राजनीतिक दलों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप एवं प्रभाव तथा छात्र संघ के चुनाव में प्राध्यापकों द्वारा छात्रों की दलबन्दी में सहभागिता प्रमुख कारण हैं।

सामाजिक आर्थिक क्षेत्र का कारण– इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों के मन में भविष्य के प्रति अनिश्चितता, शिक्षित होने के बावजूद छात्रों का असुरक्षित भविष्य, अभिभावक एवं अध्यापकों में संपर्क का अभाव तथा शिक्षा का रोजगारोन्मुख न होना प्रमुख कारण बताया गया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारत में छात्र–असंतोष अनेक परिस्थितियों का परिणाम है। आज युवा वर्ग को विभिन्न क्षेत्रों में असुरक्षा का सामना करना पड़ रहा है। वे आज मूल्यों के संघर्ष के कारण संवेगात्मक अस्थिरता की स्थिति में है। इसके अलावा अपने चारो ओर दूषित या भ्रष्ट पर्यावरण से युवा वर्ग काफी प्रभावित है। आज के अधिकांश युवकों में उचित संस्कारों के अभाव में आन्दोलनात्मक प्रवृत्ति पायी जाती है, जिसके पीछे कोई ठोस राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार नहीं है।

इस चरम स्थिति के लिए, हम किसी एक वर्ग या एक व्यक्ति को दोषी नहीं ठहरा सकते। फसल की जिम्मेदारी केवल पौधों या किसानों की नहीं, धरती और आसमान की भी है। बांझ धरती और सूखे आसमान के बीच पौधे की विसात महज किसान के पसीने से नहीं सींची जा सकती है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता है कि छात्रों के अनेक दुर्गुणों के लिए अध्यापक भी उत्तरदायी है, पर अंततः व्याप्त उन्माद का दायित्व, सम्पूर्ण सामाजिक वातावरण और पूरी प्रशासन व्यवस्था है।

References:-

1. Abrol, U. and Khan, N. (1993). Impact of Television on life style of children in A.K. Srivastava (Ed.) Research in Child and Adolescents Psychology Seminar readings New Delhi NCERT.
2. Chakravorty, V and Srivastava, R. (2002). Behavioural problems of adolescents. Prachi Journal of Psycho-cultural Dimension, 18(2), 131-134
3. Curtis, J.M. (1986). Factors in the sexual abuse of children, Psychological Report, 58, 591-597.
4. Gaur, B.P. ()1994 Personality and Transcendental Meditation, A Jainsons Publications, New Delhi, India.
5. Jacobson, E. (1938). Progressive Relaxation, Chicago University of Chicago.
6. Malhotra, S. (2002).Child Psychiatry in India. MacMillan India Ltd.

7. Parashar, R.P. (2000). Life style for perfect health. Psychological Studies, 45(3), 167-172.
8. Prasad, H. (1974). Development of Adjustment Inventory for Teenagers, Ph.D. Thesis, Bhagalpur University, Biihar
9. Verma, S. and Ojha, S. (2005). Behavioural Problems in Adolescents. Prachi Journal of Psycho-cultural Dimension, 21(2), 152-154.
10. भारतीय शिक्षा आयोग प्रतिवेदन 1964–66, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
11. उपाध्याय, अंशू (1992), डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के महाविद्यालयों के छात्रों में छात्र–असंतोष का एक अध्ययन, पी0एच0डी0 शिक्षा शास्त्र, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
12. डॉ0 सिंह, सत्य देव (2008) भारतीय समाज एवं शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
13. शरतेन्दु, सत्यनारायण, (2007–2008), मूल्य शिक्षा, शारदा शिक्षा भवन, इलाहाबाद।
14. पाण्डेय, राम शकल, (2000), मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।